International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 6 Ser. III || June 2021 || PP 64-66

भारतीय चित्रकला में महिला कलाकारों की उपस्थिति

डॉ हेमन्त कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग,
एम एम एच कॉलेज, गाजियाबाद।

अरविन्द कुमार, शोध छात्र

भारतीय चित्रकला में महिला कलाकारों की उपस्थिति सदैव प्रासंगिक रही है और इस पर तमाम लेख भी लिखे गए हैं किन्तु यह लेख इसकी पड़ताल एक नए सिरे से करता है। अतः कुछ कारण इसमें गौण हो जाते हैं और कुछ विशेष। भारतीय चित्रकला के इतिहास में यदि झांककर देखा जाय तो महिला कलाकारों की उपस्थिति लगभग नगण्य ही दिखाई पड़ती है। यद्यपि भारतीय संस्कृति और समाज में लोक कलाओं को पीढ़ी–दर पीढ़ी आगे बढ़ाने और परिष्कृत करने का भार महिलाओं के कन्धे पर ही रहा है जिसे उन्होने बख़ूबी वहन किया है। किन्तु यदि लोक कलाओं को दरकिनार करके देखा जाये तो हम पाते हैं कि कला में भी आरम्भ से ही पुरुष–सत्ता स्त्री–सत्ता पर सदैव हावी रही है, और अमूमन यही स्थिति आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

***शब्द कुंजी** : चित्रलेखा, महिला कलाकार, अमृता शेरगिल, असमानता, लैंगिक भेदभाव*

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : ऐतिहासिक दृष्टि से महिला चित्रकारों के सबसे प्राचीन साक्ष्य हमें 'महाभारत' नामक महाकाव्य में प्राप्त होते हैं जिसमें 'चित्रलेखा' नामक एक महिला चित्रकार का ज़िक्र किया गया है। यह महिला चित्रण में इतनी निपुण थी कि महज़ कल्पना अथवा हुलिया बतानें पर भी किसी भी व्यक्ति का चित्र खींच सकती थी। अपनी सखी 'उषा' के स्वपन में आये राजकुमार को उन्होने इसी तरह चित्रित किया था। यह राजकुमार कोई ओर नहीं बल्कि तत्कालीन द्वारिका नरेश भगवान श्रीकृष्ण का पौत्र 'अनिरुद्ध' था। इसके पश्चात सैकड़ों सालों के इतिहास में किसी महिला चित्रकार के सक्रिय होनें की पुष्टि नहीं होती।

प्रथम शताब्दी ई. पू. के आस–पास महाकवि कालिदास की रचनाओं में ऐसे साक्ष्य तो प्राप्त होतें हैं कि महिलायें चित्रकला के क्षेत्र में सक्रिय थीं किन्तु कोई स्पष्ट व संतोषजनक प्रमाण अथवा नाम उजागर नहीं होता। तत्पश्चात लगभग पंद्रह शताब्दियाँ महिला चित्रकारों से वंचित रही हों ऐसा तो नहीं हो सकता। किन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनें लम्बे समय में एक भी महिला चित्रकार के सक्रिय होनें का कोई ठोस प्रमाण नहीं है। बावजूद इसके कि उस समय शाही व अधिकांश बड़े घरानों में भावी वर–वधू के चित्र देखकर ही विवाह तय किये जाते थे। कुछ राजघरानों में शाही परिवार की कुमारियों अथवा स्त्रियों के मुख देखने की इजाजत बाहरी पुरुषों को नहीं थी। ऐसे में यह माना जा सकता है कि इन घरों की कुमारियों के व्यक्ति चित्र स्त्रियों द्वारा ही बनाए जाते रहे हों, लेकिन प्रबल प्रमाण न होने के कारण इस विषय में केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है। बहरहाल यह प्रश्न तो उठता ही है कि इन कुमारियों के व्यक्ति–चित्र कौन बनाता था?

लगभग पंद्रह सौ वर्षों के पश्चात मेवाड़, अजमेर और मुगल शैली में इक्का–दुक्का महिला चित्रकारों का जिक्र आता है। यूं तो सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में भी बीजापुर के शासक अली आदिल शाह प्रथम की बेगम 'चाँद सुल्ताना' के बारे में लिखित प्रमाण है कि वह चित्रकारी किया करती थी किन्तु यह शायद एक शौक से ज्यादा कुछ नहीं था, जैसा कि तत्कालीन परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि उस समय की रानियाँ और राजकुमारियाँ शिकार, नृत्य और शायरी के साथ–साथ चित्रकारी का भी शौक रखती थीं।

मेवाड़ शैली में कमला और इलाइची, अजमेर शैली में उस्ना और साहिबा तथा मुग़ल शैली में साइफा बानो, नादिरा बानो और रुकइम बानो के अतिरिक्त किसी महिला कलाकार का स्पष्ट और प्रमाणिक उल्लेख शायद ही कहीं मिलता हो। भारतीय चित्रकला के इतिहास में इसके बाद बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक चित्रकला के अनंत आकाश पर किसी महिला नक्षत्र के दर्शन तक नहीं होते।

वर्तमान स्थिति : चित्रकला के क्षेत्र में चली आ रही लैंगिक असमानता की स्थिति आज भी बदली नहीं है। हाँ, वक्त के साथ इस स्थिति में सुधार अवश्य हुआ है। यह बदलाव एक दिन का नहीं है, इसमें भी पूरी एक सदी खप जानें को है किन्तु आज भी स्थिति उतनी अच्छी नहीं जितनी कि होनी चाहिए थी। फिर भी यह बदलाव आशा की एक किरण तो लेकर आया ही है जिसनें बहुतों को अपनें सपनें साकार करने की हिम्मत दी है।

आज की स्त्री किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है, आज स्त्री नें पुरुष को पछाड़कर इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी अलग जगह बनाई है, अपना अलग मुकाम हासिल किया है। अगर हम सिर्फ समकालीन कला की बात करें तो अमृता शेरगिल, बी. प्रभा, मृणालिनी मुखर्जी, भारती खेर, अंजलि इला मेनन, गोगी सरोज पाल, अर्पित सिंह, मीरा मुखर्जी, अनुपम सूद, महासुन्दरी देवी इत्यादि ऐसे नाम हैं जो किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं, ये कला जगत के ऐसे सितारे है जो विश्व कला आकाश में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। किन्तु अफ़सोस की बात है कि ये नाम उँगलियों पर गिनें जा सकते हैं।

अधिकतर महिला चित्रकारों की स्थिति आज भी ऐसी है जैसी सैंकड़ों साल पहले थी। आज भी वे स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाती, कभी माँ–बाप, कभी सास–ससुर तो कभी पति की रजामंदी पर आकर इनका भविष्य अटक जाता है। इतना ही नहीं, बच्चों की जिम्मेदारियों के आगे एक माँ रूपी स्त्री कलाकार तो अपना सर्वस्व तक न्योछावर कर देती हैं। कुल मिलाकर स्त्री कलाकार हमारे समाज में किसी न किसी कारण से लैंगिक असमानता की शिकार होती ही रही है। इस पुरुष प्रधान समाज में हमेशा से स्त्री के सपनों की चिता जलती आई है, जब त्याग की बात आती है तो स्त्री को ही आगे किया जाता है। अपनें आज तक के जीवनकाल में मैंने आज तक यह नहीं देखा–सुना कि अमुक व्यक्ति नें अपनी 'बेटी' या 'पत्नी' के सपनें पूरे करने के लिए अपने भविष्य पर कुल्हाड़ी मार ली अर्थात अपनी नौकरी छोड़ दी या अपना काम–काज छोड़कर बेटी या पत्नी के कामकाज में हाथ बटाना आरम्भ कर दिया। मेरी सैंकड़ों सक्षम छात्राएं केवल इस वजह से पीछे रह गयी क्योंकि उन्हे अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों के आगे अपने सपनों की तिलांजलि देनी पड़ी।

आइये उन कारणों को जानने की कोशिश करतें हैं जिनकी वजह से प्रतिभाशाली महिलायें भी सही मुकाम हासिल नहीं कर पाती और सक्षम होनें के बावजूद पिछड़ जाती हैं।

समकालीन कला में लैंगिक असमानता अथवा स्त्रियों के पिछड़ने के जो मुख्य कारण है उनका विवरण अग्रलिखित है :–

अशिक्षा और आर्थिक स्थिति : ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत में केवल 65–46 प्रतिशत महिलायें ही साक्षर हैं अर्थात 34–54 प्रतिशत महिलायें तो शिक्षा ग्रहण ही नहीं कर पाती। इस आबादी में अधिकतर ग्रामीण एवं आदिवासी महिलायें शामिल हैं। ज्यादातर देखा गया है कि दुर्बल आय और सर्वहारा वर्ग लड़कों को भी नहीं पढ़ा पाता ऐसे में लड़कियों को पढानें का तो सवाल ही नहीं उठता। यकीं न आये तो किसी भट्टे का दौरा कर आइये वहाँ की पथेर (ईंट पाथने वाले लोग) की दिनचर्या को देखकर आप सच्चाई से रूबरू हो जायेंगें।

ऐसे लोगों में से हिम्मत करके अगर कोई लड़कियों को पढ़ाने के बारे में सोचता भी है तो केवल प्राइमरी स्तर, उच्च प्राइमरी स्तर या फिर ज्यादा से ज्यादा हाईस्कूल तक। इसके बाद अधिकतर लोग लड़की की पढ़ाई पर खर्च न करके उसकी शादी के बारे में सोचने लगते हैं क्योंकि लाख कानूनों के बाद भी दहेज जैसी बुराई समाज के हर तबके में व्याप्त है। कहीं यह स्वेच्छा से दिया जाता है, कहीं जबरन तो कहीं सिर्फ दिखावे के लिए अथवा मूंछों की प्रतिष्ठा के लिए। इसी कारण कई बार मध्यम आय वर्ग के लोग भी इंटरमीडिएट के बाद लड़कियों को पढानें में दिलचस्पी नहीं लेते। हालांकि धीरे–धीरे यह हालात अब बदल रहे हैं पर उतनी अच्छी तरह नहीं जैसे कि बदलनें चाहिए थे।

अगर भारत की आर्थिक स्थिति का जायजा लिया जाय तो आंकड़े बताते है कि लाखों लोग अपनी रोजमर्रा की जरूरतें भी पूरी नहीं कर पाते, जिस कारण देश में हर साल लाखों लोग कुपोषण, बीमारी या बीमारी का सही इलाज न करवा पानें के कारण मर जातें है। इन सबका मुख्य कारण है बेरोजगारी और आर्थिक विपन्नता। जब कर्ज़ और मर्ज़ पीछे पड़ें हों, भूख अंतड़ियों को निचोड़नें में लगी हो तो किताबों में मन नहीं लगता। यथा : 'जब रोटी बन जाए ख़्वाब, तो भाती नहीं किताब।'

जानकारी का अभाव व सहयोग की कमी : समकालीन कला में महिलाओं की कमी का एक कारण यह भी है कि अधिकतर महिलाओं को कला क्षेत्र की असीम संभावनाओं की ख़बर ही नहीं होती हैं जिस वज़ह से अनेक प्रतिभाशाली महिलायें कला विषय से शिक्षा ग्रहण करनें के उपरांत भी ज्यादा कुछ नहीं कर पाती जैसे कि अनेक महिलाओं को कला क्षेत्र में मिलनें वाली छात्रवृतियों, पुरस्कारों, सम्मानों, कैम्पों तथा लगनें वाली प्रदर्शनियों की जानकारी ही नहीं होती जबकि ये सभी कलाकारों को अतिरिक्त आय तो मुहैया करातें ही हैं साथ ही कलाकार को ख़्याति भी दिलाते हैं।

कला सामग्रियों का महंगा होना भी इसकी एक वज़ह मानी जा सकती है जबकि अन्य कुछेक विषयों की शिक्षा में उतना ख़र्च नहीं आता। एक विडम्बना यह भी है कि जो समय इन बालिकाओं के भविष्य निर्माण का है, इनके माता–पिता की दृष्टि में वही समय इनके लिए एक अच्छा वर खोजनें का भी है। हमारे समाज की यही विडम्बना है कि लड़कों की पढ़ाई पर तो यह दिल खोलकर ख़र्च करता है किन्तु लड़कियों के मामलें में बहुत सोच–समझकर। समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी इंटरमीडिएट के बाद लड़कियों की शिक्षा के बज़ाय उनकी शादी पर ख़र्च करना ज्यादा मुनासिब समझता है। इसके पीछे शायद यह सोच है कि लड़कियों को पढ़–लिखकर भी तो चूल्हा–चौका ही करना है, तो फिर इन्हे ज्यादा पढ़ाने की ज़रुरत ही क्या है? ऐसी मानसिकता को बदलने की ज़रुरत है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक समकालीन कला ही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं की उपस्थिति जस की तस बनी रहेगी।

यूँ तो आजकल चित्रकला के जरिये लड़कियाँ दूसरों को पेंटिंग सिखाकर, अपनी कल्पनाशीलता से दूसरे नए विकल्प तलाशकर अथवा आय के अन्य विकल्पों से जुड़कर अपना ख़र्च स्वंय उठा सकती हैं और अगर चाहे तो स्वंय का व्यवसाय भी कर सकती हैं। स्कूल्स में भी एक्टिविटी टीचर्स, आर्ट एंड क्राफ्ट टीचर्स की मांग बनी रहती है। साथ ही समर कैंप जैसे आयोजनों से अच्छा पैसा कमाया जा सकता है। फ्रीलांसिंग भी अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। इसके अलावा भी कला क्षेत्र में असीम सम्भावनायें हैं किन्तु सही जानकारी का अभाव और परिवार का उचित सहयोग न मिल पाने के कारण महिलायें अपनें सपनों के आसमान से वंचित रह जाती हैं। और सक्षम होनें के बावजूद महिलाओं की वो उड़ान देखनें को नहीं मिल पाती जो मिलनी चाहिए।

जल्दी शादी और स्वतंत्रता का अभाव : देखा गया है कि अधिकतर लड़कियों की पढ़ाई बाल–विवाह अथवा पढ़ाई के दौरान ही विवाह हो जाने के कारण छूट जाती है। अपनी आधी–अधूरी पढ़ाई को पूरा करनें का निर्णय लेने का अधिकार शायद हमारे समाज नें लड़कियों को दिया ही नहीं है, अगर दिया होता तो शादी के बाद कभी किसी महिला की पढ़ाई नहीं छूटती, कभी किसी महिला को शादी के बाद सास–ससुर अथवा पति से मिन्नतें करने की जरुरत न

पड़ती। शादी के बाद लड़की पढ़ाई पूरी करेगी या नहीं यह निर्णय ससुराल पक्ष करता है न कि लड़की। इतना ही नहीं अगर पढ़ाई जैसे तैसे पूरी कर भी ली तो उसकी नौकरी या कामकाज के अथवा भविष्य का फैसला भी ससुराल पक्ष ही करता है। क्या करना है क्या नहीं ? इसका फैसला शादी से पहले लड़की के माता–पिता करते है और बाद में ससुरालिया। स्वतंत्रता से अपनें भविष्य का निर्णय लेने का अधिकार नारी के पास है ही नहीं और इसी कारण नारी का भविष्य एक समय के बाद दिशाहीन हो जाता है।

पारिवारिक दबाव व पक्षपातपूर्ण व्यवहार : जन्म से ही लड़कियों को पक्षपातपूर्ण व्यवहार और पारिवारिक दबाव का सामना करना पड़ता है जैसे, कहाँ जाना है कहाँ नहीं ?.. क्या करना है क्या नहीं ?.. क्या पहनना है ?.. क्या देखना है ?.. क्या सुनना है ?.. किस से बात करनी है किस से नहीं ?.. किस से मिलना है किस से नहीं मिलना है ?.. कब तक जागना है ?.. कब तक पढ़ना है और कब पढ़ना बंद कर देना है ?..... ये तो महज चंद उदहारण हैं सच्चाई तो इस से भी कहीं ज्यादा बदतर है। घर के छोटे–मोटे काम, झाड़ू–पौंछा, बर्तन, धुलाई, स्त्री, चाय–पानी और खाना इत्यादि सभी कुछ धीरे–धीरे लड़कियों के माथे मढ़ दिए जाते हैं। इतने सारे कामों के बीच में यदि लड़की समय निकालकर पढ़नें बैठ भी जाये तो भी उसे चौन से पढ़नें नहीं दिया जाता, कभी किसी को कोई काम याद आ जाता है तो कभी किसी को !

खान–पान की बारी आती है तो भी लड़को को ही वरीयता दी जाती है। यदि परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो जाये तो पहले लड़की की पढ़ाई छुड़ा दी जाती है, लड़के की पढ़ाई चाहे छुड़ाई जाये या न छुड़ाई जाये। इसी तरह अगर खर्च की बात आती है तो लड़को को तो माता–पिता कर्ज लेकर भी पढ़ा लेते हैं लेकिन लड़कियों के मामलें में वो भी उतना सहयोग नहीं करते। नारी को पुरुष के बराबर का दर्जा मिला है किन्तु सिर्फ कागजों में असल में नहीं।

निवारण : कम ही लोग जानते हैं कि भारत में लगनें वाला सबसे बड़ा कला मेला किसी पुरुष के दिमाग की उपज नहीं बल्कि एक महिला कलाकार श्नेहा किरपालश के दिमाग की उपज है जिसमें सैंकड़ो देशो की कला का बाज़ार हिन्दुस्तान में एक छत के नीचे देखा जा सकता है। इस सदी की यह पहली ऐसी महिला कलाकार है जिसनें भारत को विश्व स्तर पर कला के क्षेत्र में एक अलग नई पहचान दिलाई है।

नेहा किरपाल का यह प्रयास ये सिद्ध करने के लिए काफ़ी है कि यदि आज की नारी को सिर्फ़ कागज़ों में नहीं बल्कि असलियत में समान अधिकार और साधन दिए जाएँ तो वह पुरुषों से भी कई गुना आगे बढ़कर दिखा सकती है। क्योंकि नारी ने तमाम फ़र्ज़ निभाते हुए सभी अड़चनों और मुश्किलों को झेलकर एक बार नहीं अनेक बार स्वंय को पुरुष से बेहतर सिद्ध किया है। अगर परिवार का सहयोग, प्रोत्साहन, प्रचुर साधन और सही मार्गदर्शन मिले तो नारी पारिवारिक दायित्वों के साथ–साथ बुलंदियों के आसमान को छू सकती है। हिन्दुस्तान एक प्रतिभावान देश है यहाँ गुदड़ी के लाल ही नहीं लालियाँ भी हैं। ज़रूरत है तो बस इन्हे सहयोग करनें की, इनकी प्रतिभा को तराशने की, इन्हे इनके हिस्से का आसमान देने की.. फिर यक़ीनन सारी दुनिया इनकी उन्मुक्त उड़ान देखेगी।